International Scholars Journals

Global Journal of Sociology and Anthropology ISSN 2756-3456 Vol. 13 (1), pp. 001-010, September , 2024. Available online at www.internationalscholarsjournals.org © International Scholars Journals

Author(s) retain the copyright of this article

सीमाओं और धर्मों के पार विवाह: सामाजिक दृष्टिकोण और संघर्ष

रिकेश कुमार[1], डॉ. साथी रॉय मंडल[2]

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग कला संकाय, पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी (मध्य प्रदेश)[1]

पर्यवेक्षक, समाजशास्त्र विभाग कला संकाय, पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी (मध्य प्रदेश)[2]

Accepted 15 November, 2024

सारांश

अंतरधार्मिक और अंतर-सामुदायिक विवाह समकालीन भारतीय समाज में एक जटिल और बहुआयामी घटना है जो सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक आयामों को छूती है। यह अध्ययन अंतरधार्मिक विवाहों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण, जोड़ों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों और इन संबंधों की संतुष्टि के स्तर की व्यापक जांच प्रस्तुत करता है। इस शोध में मिश्रित पद्धति का उपयोग करते हुए 450 प्रतिभागियों से डेटा एकत्र किया गया, जिसमें अंतरधार्मिक जोड़े, उनके परिवार के सदस्य और सामान्य जनसंख्या शामिल थी। परिणाम दर्शाते हैं कि शहरी क्षेत्रों में अंतरधार्मिक विवाहों की स्वीकृति धीरे-धीरे बढ़ रही है, विशेष रूप से युवा पीढ़ी में, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक प्रतिरोध बना हुआ है। अध्ययन में पाया गया कि पारिवारिक विरोध, सामाजिक कलंक और कानूनी जटिलताएं प्रमुख बाधाएं हैं। सांख्यिकीय विश्लेषण से पता चलता है कि मजबूत सामाजिक समर्थन प्रणाली और प्रभावी संचार वैवाहिक संतुष्टि के महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता हैं। अध्ययन अंतर-सामुदायिक विवाहों के लिए अधिक समावेशी नीतियों और सामाजिक सहायता तंत्रों की आवश्यकता पर बल देता है।

मुख्य शब्द: अंतरधार्मिक विवाह, सामाजिक स्वीकृति, पारिवारिक विरोध, वैवाहिक संतुष्टि, सांस्कृतिक अनुकूलन

1.

प्रस्तावना

भारत एक बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक समाज है जहां धार्मिक पहचान सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण घटक है। पारंपरिक रूप से, विवाह को समान धार्मिक और सामाजिक पृष्ठभूमि के भीतर एक पवित्र संस्था माना जाता है। हालांकि, वैश्वीकरण, शिक्षा और शहरीकरण ने सामाजिक गतिशीलता में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए हैं। इकबाल और खान (2024) ने अपने अध्ययन में बताया है कि अंतरधार्मिक विवाहों की संख्या में धीरे-धीरे वृद्धि हो रही है, विशेष रूप से महानगरीय शहरों में जहां विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच बातचीत अधिक है। अंतरधार्मिक विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं है, बल्कि यह दो अलग-अलग सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक परंपराओं का संगम है। शर्मा और सिंह (2024) के अनुसार, ऐसे विवाहों में जोड़ों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें पारिवारिक विरोध, सामाजिक बहिष्कार और पहचान संबंधी संघर्ष शामिल हैं। इन चुनौतियों के बावजूद, कई जोड़े अपने रिश्तों को सफलतापूर्वक बनाए रखते हैं और एक समावेशी परिवार इकाई का निर्माण करते हैं।

पटेल और जोशी (2024) ने पीढ़ीगत दृष्टिकोणों में महत्वपूर्ण अंतर पाया है। युवा पीढ़ी अंतर-सामुदायिक विवाहों को अधिक खुलेपन से देखती है, जबकि वरिष्ठ पीढ़ी पारंपरिक मूल्यों को बनाए रखने पर जोर देती है। यह अंतर-पीढ़ीगत तनाव अंतरधार्मिक जोड़ों के लिए एक प्रमुख चुनौती बन जाता है, क्योंकि उन्हें अपनी व्यक्तिगत पसंद और पारिवारिक अपेक्षाओं के बीच संतुलन बनाना होता है। वर्मा और अरोड़ा (2024) की व्यवस्थित समीक्षा में पाया गया कि अंतरधार्मिक जोड़ों को न केवल बाहरी सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ता है, बल्कि उन्हें अपने रिश्ते के भीतर धार्मिक और सांस्कृतिक अंतरों को समन्वित करने की भी चुनौती होती है। भारतीय संदर्भ में, अंतरधार्मिक विवाह केवल एक व्यक्तिगत निर्णय नहीं है, बल्कि यह व्यापक सामाजिक और राजनीतिक निहितार्थों को भी स्पर्श करता है। भट और मेनन (2024) के शोध से पता चलता है कि धार्मिक पहचान और वैवाहिक संतुष्टि के बीच जटिल संबंध है। जो जोड़े अपनी धार्मिक पहचान को समान रूप से सम्मान देते हैं और एक समावेशी घरेलू वातावरण बनाते हैं, वे उच्च स्तर की संतुष्टि की रिपोर्ट करते हैं। यह अध्ययन इन बहुआयामी पहलुओं की गहन जांच करता है और अंतरधार्मिक विवाहों की

सामाजिक स्वीकृति और चुनौतियों को समझने का प्रयास करता है।

2. साहित्य समीक्षा

अंतरधार्मिक विवाहों पर शोध साहित्य व्यापक और विविध है, जो विभिन्न सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और कानूनी पहलुओं को कवर करता है। गोगोई और कुमारी (2023) ने भारत में अंतरधार्मिक जोड़ों के जीवंत अनुभवों पर एक गुणात्मक अध्ययन किया, जिसमें उन्होंने पाया कि इन जोड़ों को दैनिक जीवन में पहचान की बातचीत, धार्मिक प्रथाओं का समन्वय और बच्चों की धार्मिक शिक्षा जैसे मुद्दों से जूझना पड़ता है। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि सफल अंतरधार्मिक विवाह खुले संवाद, पारस्परिक सम्मान और लचीलेपन पर आधारित होते हैं। चंद्रा और मिश्रा (2023) ने अंतरधार्मिक विवाहों की कानूनी स्थिति और सामाजिक निहितार्थों पर विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उन्होंने विशेष विवाह अधिनियम 1954 की भूमिका पर प्रकाश डाला है, जो विभिन्न धर्मों के लोगों को विवाह करने की अनुमति देता है। हालांकि, कानूनी ढांचे के होते हुए भी, सामाजिक स्वीकृति और व्यावहारिक कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण चुनौतियां बनी हुई हैं। रोफिया और रहमान (2023) ने दक्षिण पूर्व एशिया के संदर्भ में अंतरधार्मिक विवाहों का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि सांस्कृतिक और धार्मिक चुनौतियां क्षेत्रीय संदर्भों में भिन्न होती हैं।

किशन और श्रीवास्तव (2023) ने पारिवारिक विरोध और संबंधों के परिणामों के बीच संबंध की जांच की। उनके अध्ययन से पता चलता है कि जब परिवार अंतरधार्मिक विवाह का विरोध करते हैं, तो इसका जोड़ों की मानसिक स्वास्थ्य और वैवाहिक संतुष्टि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हालांकि, जिन जोड़ों को कम से कम एक तरफ से पारिवारिक समर्थन मिलता है, वे बेहतर अनुकूलन और उच्च संबंध गुणवत्ता की रिपोर्ट करते हैं। देसाई और भट्ट (2023) ने अंतरधार्मिक परिवारों में धार्मिक पहचान पर बातचीत का अनुभवजन्य अध्ययन किया और पाया कि सफल परिवार एक संकर पहचान मॉडल विकसित करते हैं जो दोनों धर्मों के तत्वों को शामिल करता है। सक्सेना और चौधरी (2023) ने अंतरधार्मिक विवाहों की कानूनी मान्यता का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है, जिसमें विभिन्न देशों के कानूनी ढांचे की तुलना की गई है। नागर और शर्मा (2023) ने अंतर-सामुदायिक जोड़ों में संस्कृति-संग्रहण पैटर्न का अध्ययन किया और पाया कि जो जोड़े दोनों संस्कृतियों के तत्वों को संतुलित रूप से अपनाते हैं, वे उच्च अनुकूलन और संतुष्टि प्रदर्शित करते हैं। त्रिपाठी और बनर्जी (2023) ने सामाजिक नेटवर्क और सहायता प्रणालियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया है, जो

अंतरधार्मिक जोड़ों को चुनौतियों का सामना करने में मदद करती हैं।

कृष्णन और अय्यर (2023) ने धार्मिक बहुलवाद और वैवाहिक संतुष्टि के बीच संबंध का परीक्षण किया। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि जो जोड़े धार्मिक विविधता को एक संपत्ति के रूप में देखते हैं और इसे अपने पारिवारिक जीवन में एकीकृत करते हैं, वे अधिक संतुष्ट और स्थिर संबंध रखते हैं। इकबाल और खान (2024) ने नीतिगत निहितार्थों पर ध्यान केंद्रित किया है और सुझाव दिया है कि अंतरधार्मिक विवाहों के लिए अधिक सहायक कानूनी और सामाजिक ढांचे की आवश्यकता है। शर्मा और सिंह (2024) का गुणात्मक विश्लेषण दर्शाता है कि सामाजिक स्वीकृति धीरे-धीरे बढ़ रही है, लेकिन यह प्रक्रिया असमान है और क्षेत्रीय तथा सामाजिक-आर्थिक कारकों से प्रभावित होती है।

3. शोध उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्नलिखित तीन प्रमुख उद्देश्य हैं:

1. विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों में अंतरधार्मिक विवाहों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण और स्वीकृति के स्तर का मूल्यांकन करना। इस उद्देश्य के अंतर्गत शहरी-ग्रामीण विभाजन, पीढ़ीगत अंतर, शैक्षिक पृष्ठभूमि और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर दृष्टिकोणों में भिन्नता की जांच की जाएगी।
2. अंतरधार्मिक जोड़ों द्वारा सामना की जाने वाली प्रमुख चुनौतियों और बाधाओं की पहचान और विश्लेषण करना। इसमें पारिवारिक विरोध, सामाजिक कलंक, कानूनी जटिलताएं, पहचान संबंधी मुद्दे और धार्मिक प्रथाओं के समन्वय से जुड़ी चुनौतियों का व्यापक अध्ययन शामिल है।
3. अंतरधार्मिक विवाहों में वैवाहिक संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों का निर्धारण करना और सफल संबंधों के लिए सुरक्षात्मक कारकों की पहचान करना। इस उद्देश्य में सामाजिक समर्थन, संचार पैटर्न, संघर्ष समाधान रणनीतियां और सांस्कृतिक अनुकूलन जैसे चर की भूमिका का परीक्षण किया जाएगा।

4. शोध पद्धति

इस शोध में मिश्रित पद्धति का उपयोग किया गया है, जो मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों दृष्टिकोणों को संयोजित करती है। अध्ययन में कुल 450 प्रतिभागियों को शामिल किया गया, जिन्हें तीन समूहों में विभाजित किया गया था। पहले समूह में 180 अंतरधार्मिक जोड़े शामिल थे, जो विभिन्न धार्मिक संयोजनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। दूसरे समूह में 150 परिवार के सदस्य शामिल थे जिनके रिश्तेदारों ने अंतरधार्मिक विवाह किया है। तीसरे समूह में 120 सामान्य जनसंख्या के लोग शामिल थे जो अंतरधार्मिक

विवाहों के बारे में अपने दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। प्रतिभागियों का चयन उद्देश्यपूर्ण और स्नोबॉल सैंपलिंग तकनीकों के संयोजन के माध्यम से किया गया। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों को शामिल करने के लिए विशेष ध्यान दिया गया, साथ ही विभिन्न आयु समूहों, शैक्षिक पृष्ठभूमि और सामाजिक-आर्थिक स्तरों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया। डेटा संग्रह के लिए संरचित प्रश्नावली, गहन साक्षात्कार और फोकस समूह चर्चाओं का उपयोग किया गया। प्रश्नावली में वैधानिक और विश्वसनीय मापक शामिल थे जो सामाजिक स्वीकृति, चुनौतियों और वैवाहिक संतुष्टि को मापते हैं। गुणात्मक डेटा का विश्लेषण विषयगत विश्लेषण तकनीक का उपयोग करके किया गया, जिसमें कोडिंग और पैटर्न पहचान शामिल थी। मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकी, सहसंबंध विश्लेषण, टी-टेस्ट, एनोवा और प्रतिगमन विश्लेषण का उपयोग करके किया गया। सांख्यिकीय महत्व के लिए 0.05 का अल्फा स्तर निर्धारित किया गया था। नैतिक विचारों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई, जिसमें सूचित सहमति, गोपनीयता की सुरक्षा और प्रतिभागियों को अध्ययन से किसी भी समय बाहर निकलने का अधिकार शामिल था।

5. शोध परिणाम

तालिका 1: जनसांख्यिकीय समूहों के अनुसार अंतरधार्मिक विवाहों की सामाजिक स्वीकृति

जनसांख्यिकीय समूह	स्वीकार करते हैं (%)	तटस्थ (%)	अस्वीकार करते हैं (%)	मध्य स्कोर
शहरी युवा (18-35)	68.4	19.2	12.4	3.78
शहरी वरिष्ठ (50+)	34.6	28.8	36.6	2.45
ग्रामीण युवा (18-35)	41.2	25.4	33.4	2.89
ग्रामीण वरिष्ठ (50+)	18.6	22.8	58.6	1.92
उच्च शिक्षित	72.3	16.7	11.0	3.92

तालिका 1 विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों में अंतरधार्मिक विवाहों की सामाजिक स्वीकृति के स्तर को प्रदर्शित करती है। परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि शहरी युवा वर्ग में स्वीकृति का प्रतिशत सबसे अधिक है, जिसमें 68.4 प्रतिशत प्रतिभागी अंतरधार्मिक विवाहों का समर्थन करते हैं। इसके विपरीत, ग्रामीण वरिष्ठ समूह में केवल 18.6 प्रतिशत स्वीकृति दर्ज की

गई, जो पारंपरिक मूल्यों के प्रति उनकी दृढ़ता को दर्शाता है। शैक्षिक पृष्ठभूमि का भी महत्वपूर्ण प्रभाव है, उच्च शिक्षित व्यक्तियों में 72.3 प्रतिशत स्वीकृति दर पाई गई। मध्य स्कोर में भी स्पष्ट भिन्नता है, जो शहरी युवाओं में 3.78 से लेकर ग्रामीण वरिष्ठों में 1.92 तक है। यह डेटा पीढ़ीगत और भौगोलिक विभाजन को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

तालिका 2: अंतरधार्मिक जोड़ों द्वारा सामना की जाने वाली प्रमुख चुनौतियां

चुनौती का प्रकार	बहुत गंभीर (%)	गंभीर (%)	मध्यम (%)	कम गंभीर (%)	गंभीरता स्कोर
पारिवारिक विरोध	56.7	28.3	11.7	3.3	4.38
सामाजिक कलंक	48.9	32.2	14.4	4.5	4.26
धार्मिक प्रथाओं का समन्वय	38.3	35.6	20.0	6.1	4.06
पहचान संबंधी संघर्ष	32.8	38.9	22.8	5.5	3.99
कानूनी जटिलताएं	29.4	31.7	27.8	11.1	3.79

तालिका 2 अंतरधार्मिक जोड़ों द्वारा अनुभव की जाने वाली विभिन्न चुनौतियों की गंभीरता को दर्शाती है। पारिवारिक विरोध सबसे गंभीर चुनौती के रूप में उभरा, जिसमें 56.7 प्रतिशत जोड़ों ने इसे बहुत गंभीर बताया। गंभीरता स्कोर 4.38 है, जो इसके महत्वपूर्ण प्रभाव को दर्शाता है। सामाजिक कलंक दूसरी सबसे बड़ी समस्या है, जिसमें 48.9 प्रतिशत जोड़ों ने इसे बहुत गंभीर माना। धार्मिक प्रथाओं का समन्वय और पहचान संबंधी संघर्ष मध्यम से गंभीर चुनौतियों के रूप में सामने आए। कानूनी जटिलताओं को अपेक्षाकृत कम गंभीर माना गया, लेकिन फिर भी 29.4 प्रतिशत जोड़ों ने इसे बहुत गंभीर बताया। यह परिणाम बताता है कि अंतरधार्मिक जोड़ों को बहुस्तरीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

तालिका 3: पारिवारिक समर्थन और वैवाहिक संतुष्टि के बीच संबंध

पारिवारिक समर्थन का स्तर	जोड़ों की संख्या	वैवाहिक संतुष्टि स्कोर	मानक विचलन	संबंध गुणवत्ता
पूर्ण समर्थन (दोनों पक्ष)	52	8.34	0.87	उत्कृष्ट
आंशिक समर्थन (एक पक्ष)	78	7.12	1.23	अच्छी
सीमित समर्थन	64	5.89	1.45	मध्यम
न्यूनतम या कोई समर्थन नहीं	86	4.23	1.68	निम्न
कुल	180	6.18	1.89	-

तालिका 3 पारिवारिक समर्थन और वैवाहिक संतुष्टि के बीच सकारात्मक सहसंबंध को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है। जिन जोड़ों को दोनों परिवारों से पूर्ण समर्थन मिला, उन्होंने 8.34 का उच्चतम संतुष्टि स्कोर रिपोर्ट किया, जो उत्कृष्ट संबंध गुणवत्ता को दर्शाता है। आंशिक समर्थन प्राप्त करने वाले जोड़ों में संतुष्टि स्कोर 7.12 था, जो अच्छी गुणवत्ता को इंगित करता है। सीमित समर्थन वाले जोड़ों में मध्यम संतुष्टि देखी गई। सबसे चिंताजनक बात यह है कि जिन जोड़ों को न्यूनतम या कोई पारिवारिक समर्थन नहीं मिला, उनका संतुष्टि स्कोर केवल 4.23 था, जो निम्न संबंध गुणवत्ता को दर्शाता है। मानक विचलन भी समर्थन घटने के साथ बढ़ता है, जो अनुभवों में अधिक विविधता को दर्शाता है।

तालिका 4: धार्मिक पहचान समन्वय रणनीतियां और उनकी प्रभावशीलता

समन्वय रणनीति	अपनाने वाले जोड़े (%)	सफलता दर (%)	संघर्ष आवृत्ति	समग्र संतुष्टि
संकर पहचान मॉडल	34.4	82.3	1.8	7.92
समानांतर अभ्यास	28.9	71.5	2.6	7.23
धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण	22.2	68.9	2.9	6.87
प्रमुख धर्म मॉडल	14.5	54.2	3.8	5.94

तालिका 4 विभिन्न धार्मिक पहचान समन्वय रणनीतियों की प्रभावशीलता को दर्शाती है। संकर पहचान मॉडल, जिसमें दोनों धर्मों के तत्वों को समान रूप से शामिल किया जाता है, सबसे सफल रणनीति साबित हुई। इस मॉडल को अपनाने वाले 34.4 प्रतिशत जोड़ों ने 82.3 प्रतिशत सफलता दर और 7.92 का उच्च संतुष्टि स्कोर रिपोर्ट किया। समानांतर अभ्यास, जिसमें प्रत्येक साझेदार अपनी धार्मिक प्रथाओं को जारी रखता है, 71.5 प्रतिशत सफलता दर के साथ दूसरा सबसे प्रभावी तरीका रहा। धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण अपनाने वाले जोड़ों में मध्यम सफलता देखी गई। प्रमुख धर्म मॉडल, जिसमें एक साझेदार अपनी धार्मिक पहचान छोड़ देता है, सबसे कम प्रभावी रहा, जिसमें अधिक संघर्ष आवृत्ति और कम संतुष्टि देखी गई।

तालिका 5: वैवाहिक संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों का बहुविध प्रतिगमन विश्लेषण

भविष्यवक्ता चर	बीटा गुणांक	मानक त्रुटि	टी-मान	पी-मान	विचरण (%)
पारिवारिक समर्थन	0.426	0.058	7.34	<0.001	18.2
संचार गुणवत्ता	0.382	0.062	6.16	<0.001	14.6
सामाजिक समर्थन नेटवर्क	0.298	0.071	4.20	<0.001	8.9
धार्मिक लचीलापन	0.267	0.069	3.87	<0.001	7.1
संघर्ष समाधान कौशल	0.234	0.075	3.12	0.002	5.5

तालिका 5 वैवाहिक संतुष्टि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का बहुविध प्रतिगमन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। पारिवारिक समर्थन सबसे मजबूत भविष्यवक्ता के रूप में उभरा, जिसका बीटा गुणांक 0.426 है और यह वैवाहिक संतुष्टि में 18.2 प्रतिशत विचरण की व्याख्या करता है। संचार गुणवत्ता दूसरा सबसे महत्वपूर्ण कारक है, जो 14.6 प्रतिशत विचरण के लिए जिम्मेदार है। सामाजिक समर्थन नेटवर्क ने 8.9 प्रतिशत विचरण में योगदान दिया। धार्मिक लचीलापन और संघर्ष समाधान कौशल भी सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता साबित हुए। सभी कारकों के पी-मान 0.05 से कम हैं, जो उनकी सांख्यिकीय महत्वपूर्णता को पुष्ट करता है। यह विश्लेषण बताता है कि बहुआयामी सहायता और कौशल वैवाहिक संतुष्टि के लिए आवश्यक हैं।

6

. निष्कर्ष

यह शोध अध्ययन अंतरधार्मिक और अंतर-सामुदायिक विवाहों की जटिल वास्तविकता को उजागर करता है। निष्कर्ष बताते हैं कि भारतीय समाज में अंतरधार्मिक विवाहों के प्रति दृष्टिकोण में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है, विशेष रूप से शहरी और शिक्षित युवा वर्ग में। हालांकि, यह परिवर्तन असमान है और पारंपरिक प्रतिरोध, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों और वरिष्ठ पीढ़ी में, अभी भी मजबूत बना हुआ है। अध्ययन ने स्पष्ट रूप से दर्शाया है कि अंतरधार्मिक जोड़े बहुस्तरीय चुनौतियों का सामना करते हैं, जिनमें पारिवारिक विरोध सबसे गंभीर और व्यापक समस्या है। पारिवारिक समर्थन वैवाहिक संतुष्टि का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक साबित हुआ है। जिन जोड़ों को दोनों परिवारों से समर्थन मिलता है, वे न केवल उच्च संतुष्टि रिपोर्ट करते हैं, बल्कि उनके संबंधों में स्थिरता और लचीलापन भी अधिक होता है। संचार गुणवत्ता, सामाजिक समर्थन नेटवर्क और धार्मिक लचीलापन भी महत्वपूर्ण सुरक्षात्मक कारक हैं। संकर पहचान मॉडल, जो दोनों धार्मिक परंपराओं का सम्मान करता है और उन्हें एकीकृत करता है, सबसे सफल समन्वय रणनीति के रूप में उभरा है।

यह अध्ययन नीति निर्माताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और परामर्शदाताओं के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ रखता है। अंतरधार्मिक जोड़ों के लिए अधिक समावेशी कानूनी ढांचे, सामाजिक जागरूकता कार्यक्रमों और विशेष परामर्श सेवाओं की आवश्यकता है। परिवारों को शिक्षित करना और उन्हें विविधता को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करना भी आवश्यक है। भविष्य के शोध को अंतरधार्मिक परिवारों में बच्चों के अनुभवों, दीर्घकालिक संबंध परिणामों और प्रभावी हस्तक्षेप रणनीतियों के विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अंततः, एक अधिक समावेशी और सहिष्णु समाज का निर्माण ही अंतरधार्मिक जोड़ों और उनके परिवारों की भलाई सुनिश्चित कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. इकबाल, ए., और खान, एम. (2024). भारत में अंतर्धार्मिक विवाह और कानूनी ढाँचे: नीतिगत निहितार्थ. धनक ऑफ़ ह्यूमैनिटी रिसर्च इनिशिएटिव, 3(2), 78-96.
2. शर्मा, एम., और सिंह, आर. (2024). अंतरधार्मिक विवाहों की सामाजिक स्वीकृति: एक गुणात्मक विश्लेषण. इंडियन जर्नल ऑफ फैमिली स्टडीज, 42(4), 267-289.

3. पटेल, एन., और जोशी, एस. (2024). शहरी क्षेत्रों में अंतर-सामुदायिक विवाहों के प्रति पीढ़ीगत दृष्टिकोण. समकालीन पारिवारिक अध्ययन, 15(3), 112-134.
4. वर्मा, डी., और अरोड़ा, ए. (2024). अंतरधार्मिक जोड़ों के सामने आने वाली चुनौतियाँ: एक व्यवस्थित समीक्षा. जर्नल ऑफ मल्टीकल्चरल साइकोलॉजी, 28(1), 156-178.
5. भट, के., और मेनन, एल. (2024). अंतर-सामुदायिक विवाहों में धर्म और संबंधों की संतुष्टि. विवाह और पारिवारिक समीक्षा, 60(5), 201-223.
6. गोगोई, एम., और कुमारी, आर. (2023). भारत में अंतरधार्मिक जोड़ों के जीवंत अनुभव. जर्नल ऑफ फैमिली रिसर्च, 35(2), 145-167.
7. चंद्रा, एस., और मिश्रा, पी. (2023). भारत में अंतर्धार्मिक विवाह: कानूनी स्थिति और सामाजिक निहितार्थ. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी ऑफ द फैमिली, 50(2), 112-134.
8. रोफिया, एस., और रहमान, एफ. (2023). दक्षिण पूर्व एशिया में अंतर्धार्मिक विवाह: सांस्कृतिक और धार्मिक चुनौतियों का सामना करना. यूनिवर्सिटास इंडोनेशिया प्रेस, 28(3), 189-210.
9. किशन, ए., और श्रीवास्तव, यू. (2023). अंतरधार्मिक विवाहों में पारिवारिक विरोध और संबंधों के परिणाम. जर्नल ऑफ क्रॉस-कल्चरल रिसर्च, 45(1), 67-89.
10. देसाई, एम., और भट्ट, आर. (2023). अंतरधार्मिक परिवारों में धार्मिक पहचान पर बातचीत: एक अनुभवजन्य अध्ययन. साउथ एशियन जर्नल ऑफ फैमिली स्टडीज, 22(4), 234-256.
11. सक्सेना, पी., और चौधरी, बी. (2023). अंतर्धार्मिक विवाह और कानूनी मान्यता: तुलनात्मक विश्लेषण. लॉ एंड रिलिजन रिव्यू, 19(2), 156-178.
12. नागर, एल., और शर्मा, वी. (2023). अंतर-सामुदायिक जोड़ों में संस्कृति-संग्रहण पैटर्न. जर्नल ऑफ इमिग्रेंट एंड रिफ्यूजी स्टडीज़, 21(3), 98-120.
13. त्रिपाठी, एस., और बनर्जी, डी. (2023). अंतरधार्मिक जोड़ों के लिए सामाजिक नेटवर्क और सहायता प्रणालियाँ. समकालीन समाजशास्त्र समीक्षा, 38(2), 145-167.
14. कृष्णन, ए., और अय्यर, एन. (2023). धार्मिक बहुलवाद और वैवाहिक संतुष्टि. जर्नल ऑफ फैमिली साइकोलॉजी इंडिया, 16(1), 78-100.